हफ़्तावार रिसाला : 380
Weekly Booklet : 380

Geebat Ki Tabah Kariyan Se 52 Madani Phool

"ग़ीबत की तबाह कारियां" से 52 मदनी फूल

(सफ़ह़ात : 20)

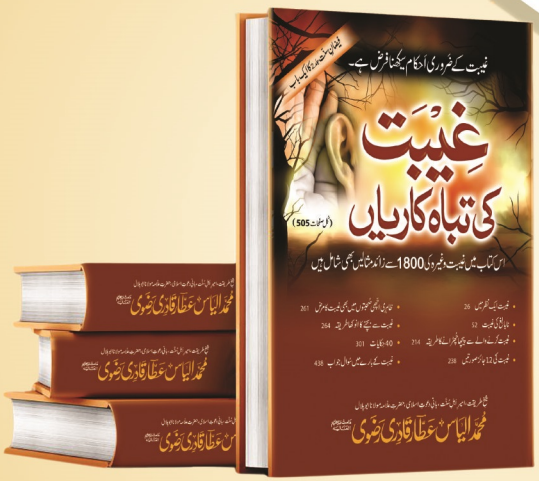

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे़ तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले नीचे दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَالله عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** पाक! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आखि़र एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

तालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दावते इस्लामी इन्डिया)

येह रिसाला “**ग़ीबत की तबाह कारियां” से 52 मदनी फूल**”

शैखे़ तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है। इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लत़ी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए WhatsApp, Email या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दावते इस्लामी इन्डिया)
फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मदआबाद-1, गुजरात।
MO. 98987 32611 E-mail : hind.printing92@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

"ग़ीबत की तबाह कारियां" से 52 मदनी फूल[1]

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** पाक उस पर दस रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है और जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े **अल्लाह** पाक उस पर सौ रहमतें नाज़िल फ़रमाता है और जो मुझ पर सौ मर्तबा दुरूदे पाक पढ़े **अल्लाह** पाक उस की दोनों आख़ों के दरमियान लिख देता है कि येह निफ़ाक़ और जहन्नम की आग से आज़ाद है और उसे बरोज़े क़ियामत शोहदा के साथ रखेगा।

(معجم اوسط، 5/252، حدیث:2735)

मुश्किल जो सर पे आ पड़ी तेरे ही नाम से टली
मुश्किल कुशा है तेरा नाम तुझ पर दुरूद और सलाम

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴾1﴿ एक साल की इबादत का सवाब

एक बार ह़ज़रते मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام ने बारगाहे ख़ुदा वन्दी में अ़र्ज़ की **: या अल्लाह** पाक! जो अपने भाई को नेकी का हुक्म करे और बुराई से रोके उस की जज़ा क्या है ? **अल्लाह** पाक ने इर्शाद फ़रमाया **:** मैं उस के हर हर कलिमे के बदले **एक एक साल की इबादत का सवाब** लिखता हूं और उसे जहन्नम की सज़ा देने में मुझे ह़या आती है।

(مکاشفۃ القلوب، ص48) (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 34)

1... अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की किताब "ग़ीबत की तबाह कारियां" से चन्द अह़ादीसे मुबारका और फ़रामीने बुज़ुर्गाने दीन का मजमूआ़।

﴾2﴿ बख़्शिश दिलाने वाला अ़मल

"रूहुल बयान" में येह ह़दीसे क़ुदसी है : जिस ने एक बार بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ को اَلْحَمْد शरीफ़ के साथ मिला कर (या'नी بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ख़त्मे सूरह तक) पढ़ा तो तुम गवाह हो जाओ कि मैं ने उसे बख़्श दिया, उस की तमाम नेकियां क़बूल फ़रमाईं और उस के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये और उस की ज़बान को हरगिज़ न जलाऊंगा और उस को अ़ज़ाबे क़ब्र, अ़ज़ाबे नार, अ़ज़ाबे क़ियामत और बड़े ख़ौफ़ से नजात दूंगा। (تفسیر روح البیان، 1/9) मिलाने का मज़ीद वाज़ेह़ त़रीक़ा मुलाह़ज़ा फ़रमा लीजिये : بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ-اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ---- सूरह पूरी कीजिये।

(ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 37)

﴾3﴿ चार नसीह़तें

ह़ज़रते इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه इर्शाद फ़रमाते हैं : मैं कोहे लुबनान में कई औलियाए किराम رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِم की सोह़बत में रहा उन में से हर एक ने मुझे येही वसिय्यत की, कि जब लोगों में जाओ तो उन्हें इन चार बातों की नसीह़त करना : ﴾1﴿ जो पेट भर कर खाएगा उसे इ़बादत की लज़्ज़त नसीब नहीं होगी ﴾2﴿ जो ज़ियादा सोएगा उस की उ़म्र में बरकत न होगी ﴾3﴿ जो सिर्फ़ लोगों की ख़ुशनूदी चाहेगा वोह रिज़ाए इलाही से मायूस हो जाएगा ﴾4﴿ जो ग़ीबत और फ़ुज़ूल गोई ज़ियादा करेगा वोह दीने इस्लाम पर नहीं मरेगा। (منہاج العابدین، ص98) (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 46)

﴾4﴿ मुसल्मान की बे इ़ज़्ज़ती कबीरा गुनाह है

रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم व رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا का फ़रमाने आ़लीशान है : बेशक किसी मुसल्मान की नाह़क़ बे इ़ज़्ज़ती करना कबीरा गुनाहों में से है। (ابوداؤد، 4/353، حدیث:4877) (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 58)

﴾5﴿ जहन्नम पर ह़राम आंखें

अल्लाह पाक ने ह़ज़रते मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ वह़ी फ़रमाई : "ऐ मूसा ! मैं ने तीन क़िस्म की आंखों को जहन्नम पर ह़राम फ़रमा दिया है, ﴾1﴿ वोह आंख जो राहे ख़ुदा में पहरा देती है, ﴾2﴿ वोह आंख जो **अल्लाह** पाक की ह़राम कर्दा चीज़ों से रुक जाती है और ﴾3﴿ वोह आंख जो मेरे ख़ौफ़ से रोती है, और आंसू के इ़लावा हर शै की एक जज़ा है और आंसू की जज़ा रह़मत, मग़्फ़िरत और जन्नत में दाख़िले के इ़लावा कुछ नहीं।" (بحر الدموع، ص172) (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 77)

﴾6﴿ तुम जन्नत में मेरे साथ होगे

एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैं सिर्फ़ **एक महीने** के रोज़े रखता हूं इस पर इज़ाफ़ा नहीं करता, और सिर्फ़ **पांच** नमाज़ें पढ़ता हूं इस से ज़ियादा नहीं पढ़ता और मेरे **माल** में ज़कात फ़र्ज़ नहीं और न ही मुझ पर **ह़ज** फ़र्ज़ है और न ही नफ़्ल ह़ज करता हूं, मैं मरने के बा'द कहां जाऊंगा ? **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने **तबस्सुम** फ़रमाते हुए इर्शाद फ़रमाया : तुम **जन्नत** में मेरे साथ होगे जब कि तुम अपने दिल को दो बातों या'नी **ख़ियानत और ह़सद** से बचाओ और अपनी ज़बान को दो बातों या'नी **ग़ीबत और झूट** से और दो बातों से आंखों को बचाओ या'नी जिस की त़रफ़ नज़र करना **अल्लाह** पाक ने ह़राम क़रार दिया है उस की त़रफ़ न देखो और किसी मुसल्मान को ह़क़ारत से न देखो। (قوت القلوب، 1/433) (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 78)

﴾7﴿ हर सुनी सुनाई बात करने वाला

इस **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ज़ेह्न में दोहराइये : كَفٰى بِالْمَرْءِ كَذِباً اَنْ يُّحَدِّثَ بِكُلِّ مَا سَمِعَ या'नी किसी इन्सान के झूटा होने को येही

काफ़ी है कि वोह हर सुनी सुनाई बात (बिग़ैर तह़क़ीक़ किये) बयान कर दे।

(مقدمہ صحیح مسلم، ص17، حدیث:7) (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 91)

﴾8﴿ मह़ब्बतों के चोरों से बचो

बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم फ़रमाते हैं : अ़क़्लों के दुश्मनों और मह़ब्बतों के चोरों से बचो, येह चोर बदगोई करने वाले और चुग़ली खाने वाले हैं और चोर तो माल चुराते हैं जब कि येह (ग़ीबतें और चुग़्लियां करने वाले) लोग मह़ब्बतें चुराते हैं। (المستطرف، 1/151) (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 94)

﴾9﴿ मरने से एक साल पहले

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا से रिवायत है कि जब **अल्लाह** पाक किसी बन्दे के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है तो उस के **मरने से एक साल पहले** एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर फ़रमा देता है जो उस को राहे रास्त पर लगाता रहता है ह़त्ता कि वोह ख़ैर (या'नी भलाई) पर मर जाता है और लोग कहते हैं : फ़ुलां शख़्स अच्छी ह़ालत पर मरा है। जब ऐसा ख़ुश नसीब और नेक शख़्स मरने लगता है तो उस की जान निकलने में जल्दी करती है। उस वक़्त वोह **अल्लाह** पाक से मुलाक़ात को पसन्द करता है और **अल्लाह** पाक उस की मुलाक़ात को, जब **अल्लाह** पाक किसी के साथ बुराई का इरादा करता है तो **मरने से एक साल क़ब्ल एक शैत़ान** उस पर मुसल्लत़ कर देता है जो उसे बहकाता रहता है ह़त्ता कि वोह अपने बद तरीन वक़्त में मर जाता है। उस के पास जब मौत आती है तो उस की जान अटक्ने लगती है। उस वक़्त येह शख़्स **अल्लाह** पाक से मिलने को पसन्द नहीं करता और **अल्लाह** उस से मिलने को।

(موسوعہ لابن ابی الدنیا، 5/443 حدیث 157 ملخصاً) (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 96)

﴾10﴿ 100 हूरें

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने चालीस साल तक **अल्लाह** पाक की इ़बादत की। एक बार दुआ़ की : **या अल्लाह** पाक ! तेरी रह़मत से मुझे जो कुछ जन्नत में मिलने वाला है उस की कोई झलक दुन्या में भी दिखा दे। अभी दुआ़ जारी थी कि यकदम मेह़राब शक़ हुई और उस में से एक ह़सीना व जमीला ह़ूर बरआमद हुई, उस ने कहा कि तुझे जन्नत में मुझ जैसी सो ह़ूरें इनायत की जाएंगी, जिन में हर एक की सो सो ख़ादिमाएं और हर ख़ादिमा की सो सो कनीज़ें होंगी और हर कनीज़ पर सो सो नाज़िमाएं (या'नी इन्तिज़ाम करने वालियां) होंगी। येह सुन कर वोह बुज़ुर्ग ख़ुशी के मारे झूम उठे और सुवाल किया : क्या किसी को जन्नत में मुझ से ज़ियादा भी मिलेगा ? जवाब मिला : इतना तो हर उस आ़म जन्नती को मिलेगा जो सुब्ह़ व शाम اَسْتَغْفِرُ اللهَ الْعَظِيم पढ़ लिया करता है।

(روض الریاحین، ص55) (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 101)

﴾11﴿ कामिल मुसल्मान कौन ?

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हिदायत निशान है : (कामिल) **मुसल्मान** वोह है जिस की ज़बान और हाथ से मुसल्मान को तक्लीफ़ न पहुंचे और (कामिल) **मुहाजिर** वोह है जो उस चीज़ को छोड़ दे जिस से **अल्लाह** पाक ने मन्अ़ फ़रमाया है।

(بخاری، 1/15، حدیث:10) (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 103)

﴾12﴿ ग़रीब कौन ?

अल्लाह पाक के मह़बूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : क्या तुम जानते हो **मुफ़्लिस** कौन है ?

सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : हम में **मुफ़्लिस** (या'नी ग़रीब मिस्कीन) वोह है जिस के पास न दिरहम हों और न ही कोई माल। तो **फ़रमाया :** मेरी उम्मत में **मुफ़्लिस** वोह है जो क़ियामत के दिन नमाज़, रोज़ा और ज़कात ले कर आएगा लेकिन उस ने फुलां को गाली दी होगी, फुलां पर **तोहमत** लगाई होगी, फुलां का माल खाया होगा, फुलां का ख़ून बहाया होगा और फुलां को मारा होगा। पस (इन सब गुनाहों के बदले में) उस की नेकियों में से उन सब को उन का हिस्सा दे दिया जाएगा। अगर उस के ज़िम्मे आने वाले हुक़ूक़ के पूरा होने से पहले उस की नेकियां ख़त्म हो गईं तो लोगों के गुनाह उस पर डाल दिये जाएंगे, फिर उसे जहन्नम में फेंक दिया जाएगा।

(مسلم، ص1069، حدیث:6579) (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 108)

﴾13﴿ मुआ़फ़ करने की अ़ज़ीमुश्शान फ़ज़ीलत

क़ियामत के रोज़ ए'लान किया जाएगा जिस का अज्र **अल्लाह** पाक के ज़िम्मए करम पर है, वोह उठे और जन्नत में दाख़िल हो जाए। पूछा जाएगा किस के लिये अज्र है ? वोह कहेगा : **"उन लोगों के लिये जो मुआ़फ़ करने वाले हैं।"** तो हज़ारों आदमी खड़े होंगे और बिला हिसाब **जन्नत** में दाख़िल हो जाएंगे।

(معجم اوسط، 1/542، حدیث:1998) (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 111)

﴾14﴿ जन्नत पाने के तीन नुस्ख़े

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तीन बातें जिस शख़्स में होंगी **अल्लाह** पाक (क़ियामत के दिन) उस का हिसाब बहुत आसान त़रीक़े से लेगा और उस को (अपनी रह़मत से) **जन्नत** में दाख़िल फ़रमाएगा। मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वोह कौन सी बातें हैं ? फ़रमाया : ﴾1﴿ जो तुम से क़त़्अ़ तअ़ल्लुक़ करे (या'नी तअ़ल्लुक़ तोड़े) तुम उस से मिलाप

करो ﴾2﴿ जो तुम्हें महरूम करे तुम उसे अ़ता करो और ﴾3﴿ जो तुम पर ज़ुल्म करे तुम उस को मुआ़फ़ कर दो।

(معجم اوسط، 1/263، حدیث:909) (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 112)

﴾15﴿ दिल का सियाह नुक़्ता़

ह़दीसे मुबारक में आता है : जब कोई इन्सान गुनाह करता है तो उस के दिल पर एक सियाह नुक़्ता़ बन जाता है, जब दूसरी बार गुनाह करता है तो दूसरा सियाह नुक़्ता़ बनता है यहां तक कि उस का दिल सियाह हो जाता है। नतीजतन भलाई की बात उस के दिल पर असर अन्दाज़ नहीं होती। (تفسیر درمنثور، 8/446) (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 115)

﴾16﴿ किसी की तक्लीफ़ देख कर ख़ुश न हों

अल्लाह पाक के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : अपने भाई की **शमातत** न कर (या'नी उस की मुसीबत पर इज़्हारे मसर्रत न कर) कि **अल्लाह** पाक उस पर रह़्म करेगा और तुझे उस में मुब्तला कर देगा। (ترمذی، 4/227، حدیث:2514) (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 119)

﴾17﴿ मोमिनों पर तीन एह़सान करो !

ह़ज़रते यह़्या बिन मुआ़ज़ राज़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : तुम से मोमिनों को अगर तीन फ़वाइद ह़ासिल हों तो तुम मोह़सिनीन (या'नी एह़सान करने वालों) में शुमार किये जाओगे ﴾1﴿ अगर इन्हें नफ़्अ़ नहीं पहुंचा सकते तो नुक़्सान भी न पहुंचाओ ﴾2﴿ इन्हें ख़ुश नहीं कर सकते तो रन्जीदा भी न करो ﴾3﴿ इन की ता'रीफ़ नहीं कर सकते तो बुराई भी मत करो।

(تنبیہ الغافلین، ص88) (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 153)

﴾18﴿ तीन काम नहीं कर सकते तो यूं कर लो

एक दाना का क़ौल है कि अगर तीन काम करने से आ़जिज़ हो तो

फिर तीन काम यूं कर लो ﴾1﴿ अगर भलाई नहीं कर सकते तो बुराई से भी रुक जाओ ﴾2﴿ अगर लोगों को नफ़्अ़ नहीं दे सकते तो तक्लीफ़ भी मत दो ﴾3﴿ अगर नफ़्ली रोज़ा नहीं रख सकते तो (ग़ीबत कर के) लोगों का गोश्त भी मत खाओ। (تنبیہ الغافلین، ص89) (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 120)

﴾19﴿ जो अपने लिये पसन्द करे वोही दूसरे के लिये करे

ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : अपने भाई की ग़ैर मौजूदगी में उस का ज़िक्र उसी त़रह़ करो जिस त़रह़ अपनी ग़ैर मौजूदगी में तुम अपना ज़िक्र होना पसन्द करते हो।

(تنبیہ المغترین، ص192) (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 120)

﴾20﴿ अल्लाहु जब्बार की ख़ुफ़्या तदबीर का शिकार

ह़ज़रते बक्र मुज़नी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जब तुम किसी शख़्स को देखो कि वोह लोगों के ऐबों का वकील बना हुवा है (या'नी सब की पोलें खोलता और **ग़ीबतें** करता फिरता है) तो जान लो कि वोह **अल्लाह** पाक का दुश्मन है और **अल्लाहु** जब्बार की **ख़ुफ़्या तदबीर** का शिकार है।

(تنبیہ المغترین، ص197) (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 127)

﴾21﴿ गुनाह पर शरमिन्दा करना

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने अपने भाई को ऐसे गुनाह पर आ़र दिलाया जिस से वोह तौबा कर चुका है, तो मरने से पहले वोह ख़ुद उस गुनाह में मुब्तला हो जाएगा।

(ترمذی، 4/226، حدیث:2513) (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 129)

﴾22﴿ जो ज़ियादा बोलता है वोह ज़ियादा ग़लतियां करता है

इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ज़बान की ह़िफ़ाज़त से नेक आ'माल मह़फ़ूज़ होते हैं क्यूं कि जो शख़्स ज़बान का

ध्यान नहीं रखता, हर वक़्त बोलता ही रहता है, वोह उ़मूमन लोगों की **ग़ीबत** में मुब्तला हो जाता है। (منہاج العابدین، ص65) मश्हूर मुह़ावरा है : مَنْ كَثُرَ لَغَطُهُ كَثُرَ سَقَطُهُ या'नी जो ज़ियादा बोलता है ज़ियादा ग़लतियां करता है।

(ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 133)

﴾23﴿ जन्नत के महल्लात ह़ासिल करने का नुस्ख़ा

अल्लाह पाक के प्यारे और आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने قُلْ هُوَ اللهُ اَحَدٌ (पूरी सूरत) को 10 बार पढ़ा **अल्लाह** पाक उस के लिये जन्नत में महल बनाता है जिस ने 20 बार पढ़ा उस के लिये दो महल बनाता है जिस ने 30 बार पढ़ा उस के लिये तीन महल बनाता है। ह़ज़रते उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللهُ عَنْه ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! उस वक़्त हमारे बहुत से महल्लात होंगे ? इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** पाक का फ़ज़्ल इस से भी ज़ियादा वसीअ़ है।

(سنن دارمی، 2/552، حدیث:3429) (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 133)

﴾24﴿ मुसल्मान की भलाई बयान करने वालों के लिये फ़िरिश्तों की दुआ़

मश्हूर ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते मुजाहिद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه (जिन का 103 हि. में मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में सज्दे की ह़ालत में विसाल हुवा) फ़रमाते हैं : जब कोई शख़्स अपने इस्लामी भाई का भलाई के साथ ज़िक्र करता है तो उस के साथ रहने वाले फ़िरिश्ते उसे दुआ़ देते हैं कि "तुम्हारे लिये भी इस की मिस्ल हो" और जब कोई अपने भाई को बुराई (या'नी ग़ीबत वग़ैरा) से याद करता है तो फ़िरिश्ते कहते हैं : तूने उस की पोशीदा बात ज़ाहिर कर दी ! ज़रा अपनी त़रफ़ देख और **अल्लाह** पाक का शुक्र कर कि उस ने तेरा पर्दा रखा हुवा है। (تنبیہ الغافلین، ص88) (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 154)

﴾25﴿ मेरी नेकियां कहां गईं ?

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : बेशक क़ियामत के रोज़ इन्सान के पास उस का खुला हुवा नामए आ'माल लाया जाएगा, वोह कहेगा मैं ने जो फुलां फुलां नेकियां की थीं वोह कहां गईं ? कहा जाएगा : तूने जो **ग़ीबतें** की थीं इस वज्ह से मिटा दी गईं हैं। (الترغیب والترہیب، 3/332، حدیث:30) (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 163)

﴾26﴿ ह़ाजत रवाई और बीमार पुर्सी की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا और **ह़ज़रते** अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है दोनों फ़रमाते हैं : जो अपने किसी मुसल्मान भाई की ह़ाजत रवाई के लिये जाता है **अल्लाह** पाक उस पर पछत्तर हज़ार (75000) मलाएका के ज़रीए़ साया फ़रमाता है, वोह फ़िरिश्ते उस के लिये दुआ़ करते हैं और वोह फ़ारिग़ होने तक रह़मत में ग़ोत़ाज़न रहता है और जब वोह इस काम से फ़ारिग़ हो जाता है तो **अल्लाह** पाक उस के लिये एक ह़ज और एक उ़म्रे का सवाब लिखता है। और जिस ने मरीज़ की इ़यादत की **अल्लाह** पाक उस पर पछत्तर हज़ार (75000) मलाएका के ज़रीए़ साया फ़रमाएगा और घर वापस आने तक उस के हर क़दम उठाने पर उस के लिये एक नेकी लिखी जाएगी और उस के हर क़दम रखने पर उस का एक गुनाह मिटा दिया जाएगा और एक दरजा बुलन्द किया जाएगा, जब वोह मरीज़ के साथ बैठेगा तो रह़मत उसे ढांप लेगी और अपने घर वापस आने तक रह़मत उसे ढांपे रहेगी। (معجم اوسط، 3/222، حدیث:4396) (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 167)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ग़ीबत की बद ख़स्लत से जान छुड़ाइये, नेकियां बचाइये बल्कि ख़ूब बढ़ाइये, नेकियां बढ़ाने के मक्की मदनी नुस्ख़े अपनाइये और जन्नतुल फ़िरदौस के ह़क़दार बन जाइये,

سُبْحٰنَ اللہ ! कितने ख़ुश नसीब हैं वोह इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें जो अपनी ज़बान को नेकी की दा'वत, सुन्नतों भरे बयान और ज़िक्रो दुरूद में लगाए रखते हैं। मुसल्मान की ह़ाजत रवाई करना कारे सवाब है नीज़ बीमार या परेशान मुसल्मान को तसल्ली देना भी ज़बान का अ़ज़ीमुश्शान इस्ति'माल है।

﴾27﴿ नाम मत बिगाड़िये

तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे ह़क़ीक़त बुन्याद है : जिस ने किसी मुसल्मान को उस के नाम के इ़लावा किसी लफ़्ज़ (या'नी बुरे नाम) से पुकारा उस पर मलाएका ला'नत भेजते हैं। (جامع صغیر، ص525، حدیث:8666) (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 170)

﴾28﴿ अक्सर ख़त़ाएं ज़बान से होती हैं

ख़ल्क़ के रहबर, शाफ़ेए़ महशर صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : इन्सान की अक्सर ख़त़ाएं उस की ज़बान से होती हैं।

(معجم کبیر، 10/197، حدیث:10446) (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 175)

﴾29﴿ हमेशा की रिज़ा व नाराज़ी

ह़ज़रते बिलाल बिन ह़ारिस رَضِیَ اللہُ عَنْہ रिवायत करते हैं, सुल्त़ाने दो जहान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ीक़त निशान है : कोई शख़्स अच्छी बात बोल देता है उस की इन्तिहा नहीं जानता इस की वज्ह से उस के लिये **अल्लाह** की रिज़ा उस दिन तक के लिये लिखी जाती है जब वोह उस से मिलेगा। और एक आदमी बुरी बात बोल देता है जिस की इन्तिहा नहीं जानता **अल्लाह** इस की वज्ह से अपनी नाराज़ी उस दिन तक लिख देता है जब वोह उस से मिलेगा।

(ترمذی، 4/143، حدیث:2326) (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 177)

﴾30﴿ हर सह़ाबिये नबी जन्नती जन्नती !

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मेरे अस्ह़ाब के ह़क़ में ख़ुदा से डरो ! ख़ुदा का ख़ौफ़ करो ! ! इन्हें मेरे बा'द निशाना न बनाओ, जिस ने इन्हें मह़बूब रखा मेरी मह़ब्बत की वज्ह से मह़बूब (या'नी प्यारा) रखा और जिस ने इन से बुग़्ज़ किया वोह मुझ से बुग़्ज़ रखता है, इस लिये उस ने इन से बुग़्ज़ रखा, जिस ने इन्हें ईज़ा दी उस ने मुझे ईज़ा दी, जिस ने मुझे ईज़ा दी उस ने बेशक ख़ुदाए पाक को ईज़ा दी, जिस ने **अल्लाह** पाक को ईज़ा दी क़रीब है कि **अल्लाह** पाक उसे गिरिफ़्तार करे।

(ترمذی، 5/463، حدیث:3888) (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 196)

﴾31﴿ मुसल्मान की इ़ज़्ज़त की ह़िफ़ाज़त का बदला

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जिस ने दुन्या में अपने भाई की इ़ज़्ज़त की ह़िफ़ाज़त की, **अल्लाह** पाक क़ियामत के दिन एक फ़िरिश्ता भेजेगा जो जहन्नम से उस की ह़िफ़ाज़त फ़रमाएगा। (موسوعہ لابن ابی الدنیا، 4/385، حدیث:105) (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 212)

﴾32﴿ ग़ीबत से रोकने का सवाब

जो शख़्स अपने भाई के गोश्त से उस की **ग़ैबत** (अ़दमे मौजूदगी)में रोके (या'नी मुसल्मान की **ग़ीबत** की जा रही थी इस ने रोका) तो **अल्लाह** पाक पर ह़क़ है कि उसे जहन्नम से आज़ाद कर दे।

(مشکاۃ المصابیح، 3/70، حدیث:4981) (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 213)

﴾33﴿ आग में अ़ज़ाब

ह़दीसे पाक में है : जो शख़्स जिस चीज़ के साथ **ख़ुदकुशी** करेगा वोह जहन्नम की आग में उसी चीज़ के साथ **अ़ज़ाब** दिया जाएगा।

(بخاری، 4/289، حدیث:6652) (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 219)

﴾34﴿ कुत्तों की शक्ल में उठेंगे

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ग़ीबत करने वालों, चुग़ुल ख़ोरों और पाक बाज़ लोगों के ऐब तलाश करने वालों को **अल्लाह** पाक (क़ियामत के दिन) **कुत्तों** की शक्ल में उठाएगा।

(التّوبیخ والتّنبیہ للاصبہانی، ص97، رقم:220۔ الترغیب والترہیب، 3/325، حدیث:10)

(ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 221)

﴾35﴿ दूसरों की बातें छुप कर सुनना कैसा ?

सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : जो शख़्स किसी क़ौम की बातें कान लगा कर सुने ह़ालां कि वोह इस बात को ना पसन्द करते हों या उस बात को छुपाना चाहते हों तो क़ियामत के दिन उस के कानों में पिघला हुवा सीसा डाला जाएगा।

(بخاری، 4/423، حدیث:7042) (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 237)

﴾36﴿ ग़ीबत से बचने का आसान तरीन विर्द

ह़ज़रते अ़ल्लामा मज्दुद्दीन फ़ीरोज़आबादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से मन्क़ूल है : जब किसी मजलिस में (या'नी लोगों में) बैठो और कहो : بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم وَصَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد तो **अल्लाह** पाक तुम पर एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर फ़रमा देगा जो तुम को ग़ीबत से बाज़ रखेगा और जब मजलिस से उठो तो कहो : بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم وَصَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد तो फ़िरिश्ता लोगों को तुम्हारी ग़ीबत करने से बाज़ रखेगा। (القول البدیع، ص278) (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 249)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

﴾37﴿ जहन्नम का ख़ास दरवाज़ा

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "जहन्नम में एक दरवाज़ा है

उस से वोही दाख़िल होंगे जिन का **ग़ुस्सा** किसी गुनाह के बा'द ही ठन्डा होता है।" (الفردوس بماثور الخطاب، 1/205، حدیث:784) (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 250)

﴾38﴿ अच्छे दोस्त की पहचान

अच्छी सोहबत के मुतअ़ल्लिक़ दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा फ़रमाएं : ﴾1﴿ अच्छा रफ़ीक़ वोह है कि जब तू ख़ुदा को याद करे तो वोह तेरी मदद करे और जब तू भूले तो वोह याद दिलाए। (موسوعہ لابن ابی الدنیا، 8/161، رقم42) ﴾2﴿ अच्छा रफ़ीक़ वोह है कि उस के देखने से तुम्हें ख़ुदा याद आए और उस की गुफ़्तगू से तुम्हारे अ़मल में ज़ियादती हो और उस का अ़मल तुम्हें आख़िरत की याद दिलाए।

(شعب الایمان، 7/57، حدیث:9446) (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 257)

﴾39﴿ 50 सिद्दीक़ीन का सवाब

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : अ़न्क़रीब लोगों पर एक ऐसा ज़माना आएगा कि उन की लोगों के साथ मजलिस (बैठक) ख़्वाहिशे नफ़्सानी के बिग़ैर न होगी। पस जो शख़्स वोह ज़माना पाए और सब्र करे और अपने नफ़्स की ह़िफ़ाज़त करे तो **अल्लाह** पाक उसे पचास सिद्दीक़ीन जैसा सवाब अ़त़ा करेगा। (تنبیہ المغترین، ص225) (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 257)

﴾40﴿ ग़ीबत ख़ोर से तो कुत्ता ही भला

ह़ज़रते ह़म्माद बिन ज़ैद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं एक बार ह़ज़रते मालिक बिन दीनार رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा, उन के सामने एक कुत्ता देख कर मैं ने उसे भगाना चाहा तो फ़रमाया : ऐ ह़म्माद! इसे छोड़

दो यक़ीनन येह उस बुरे साथी से बेहतर है जो मेरे पास बैठ कर लोगों की ग़ीबत करता है। (تنبیہ المغترین، ص227) (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 263)

﴾41﴿ बुरा कहने से बचने वाले का ख़ुश अन्जाम

ह़ज़रते शैख़ सा'दी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बोस्ताने सा'दी में नक़्ल करते हैं : एक नेक सीरत शख़्स अपने ज़ाती दुश्मनों का ज़िक्र भी बुराई से न करता था। जब भी किसी की बात छिड़ती, उस की ज़बान से नेक अल्फ़ाज़ ही अदा होते। उस के मरने के बा'द किसी ने ख़्वाब में देखा तो पूछा : مَافَعَلَ اللهُ بِكَ؟ या'नी **अल्लाह** पाक ने तेरे साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? येह सुवाल सुन कर उस के होंटों पर मुस्कुराहट आ गई और वोह बुलबुल की त़रह़ शीरीं (या'नी मीठी) आवाज़ में बोला : दुन्या में मेरी येही कोशिश होती थी कि मेरी ज़बान से किसी के बारे में कोई बुरी बात न निकले, नकीरैन (या'नी मुन्कर नकीर) ने भी मुझ से कोई सख़्त सुवाल न किया और اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! यूं मेरा मुआ़मला बहुत अच्छा रहा।

(بوستان سعدی، ص149) (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 269)

﴾42﴿ 6 चीज़ों के बदले जन्नत

मेरे लिये छे चीज़ों के ज़ामिन हो जाओ मैं तुम्हारे लिये **जन्नत** का ज़िम्मेदार होता हूं ﴾1﴿ जब बात करो सच बोलो और ﴾2﴿ जब वा'दा करो उसे पूरा करो और ﴾3﴿ जब तुम्हारे पास अमानत रखी जाए उसे अदा करो और ﴾4﴿ अपनी शर्मगाहों की ह़िफ़ाज़त करो और ﴾5﴿ **अपनी निगाहें नीची रखो** और ﴾6﴿ अपने हाथों को रोको (या'नी हाथ से किसी को ईज़ा न पहुंचाओ)

(مسند احمد، 8/412، حدیث:22821) (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 273)

﴾43﴿ जन्नत और दोज़ख़ में ले जाने वाली चीज़ें

जो चीज़ इन्सान को सब से ज़ियादा जन्नत में दाखिल करने वाली है वोह "तक़्वा और हुस्ने ख़ुल्क (या'नी अच्छा अख़्लाक)" है और जो चीज़ इन्सान को सब से ज़ियादा जहन्नम में ले जाने वाली है वोह दो जोफ़दार चीज़ें हैं "मूंह और शर्मगाह।"

(ترمذی، 3/404، حدیث:2011) (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 273)

﴾44﴿ सिर्फ़ अपने ऐबों को देखिये

जब कभी दूसरे के ऐब बयान करने को जी चाहे उस वक़्त अपने उ़यूब की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर उन को दूर करने में लग जाना चाहिये, ख़ुदा की क़सम! येह बहुत बड़ी सआ़दत मन्दी है। रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : उस शख़्स के लिये ख़ुश ख़बरी है जिसे उस के उ़यूब (पर नज़र) ने दूसरों की ऐबजूई से फेर दिया।

(الفردوس بماثور الخطاب، 2/447، حدیث:3929) (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 281)

﴾45﴿ अपने ऐबों को याद करो

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا का फ़रमान है : जब तू किसी के उ़यूब बयान करने का इरादा करे तो अपने ऐबों को याद कर लिया कर। (موسوعہ لابن ابی الدنیا، 4/357، رقم:56) (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 281)

﴾46﴿ अल्लाह पाक ऐब पोशी फ़रमाएगा

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا से रिवायत है कि **अल्लाह** पाक के रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : एक मुसल्मान दूसरे मुसल्मान का भाई है न उस पर ज़ुल्म करता है और न उसे बे यारो मददगार छोड़ता है और जो अपने भाई की ह़ाजत पूरी करे **अल्लाह** पाक उस की ह़ाजत पूरी करता है और

जो किसी मुसल्मान की तक्लीफ़ दूर करे **अल्लाह** पाक क़ियामत की तक्लीफ़ों में से उस की तक्लीफ़ दूर फ़रमाएगा और जो किसी मुसल्मान की **ऐ़बपोशी** करे तो ख़ुदाए सत्तार क़ियामत के रोज़ उस की ऐ़ब पोशी फ़रमाएगा।

(مسلم، ص1069، حدیث:6578) (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 283)

﴾47﴿ ऐ़ब छुपाओ जन्नत पाओ

ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है कि मदीने के सुल्त़ान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जो शख़्स अपने भाई का ऐ़ब देख कर उस की **पर्दा पोशी** कर दे तो वोह जन्नत में दाख़िल कर दिया जाएगा।

(مسند عبد بن حمید، ص279، حدیث:885) (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 283)

﴾48﴿ दुन्या ही में मुआ़फ़ करवा लेने में आ़फ़िय्यत है

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : जिस के ज़िम्मे अपने भाई का आबरू वग़ैरा किसी बात का मज़्लिमा (या'नी ज़ुल्म) हो, उसे लाज़िम है कि यहीं उस से मुआ़फ़ी चाह ले क़ब्ल उस वक़्त के आने के कि वहां न दीनार होंगे और न दिरहम अगर इस के पास कुछ नेकियां होंगी तो ब क़दर उस के ह़क़ के इस से ले कर उसे दी जाएंगी वरना उस के गुनाह इस पर रखे जाएंगे।

(بخاری، 2/128، حدیث:2449) (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 294)

﴾49﴿ गुनाह के इल्ज़ाम का अ़ज़ाब

नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़्वाब में देखे हुए कई मनाज़िर का बयान फ़रमा कर येह भी फ़रमाया कि कुछ लोगों को **ज़बानों** से

लटकाया गया था। मैं ने जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام से उन के बारे में पूछा तो उन्हों ने बताया कि येह लोगों पर बिला वज्ह इल्ज़ामे गुनाह लगाने वाले हैं।

(شرح الصدور، ص184) (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 295)

﴾50﴿ اَسْتَغْفِرُ اللّٰه कहने की फ़ज़ीलत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : مَنِ اسْتَغْفَرَ اللّٰهَ غَفَرَ لَهٗ या'नी जो कोई **अल्लाह** पाक से इस्तिग़फ़ार (या'नी मग़्फ़िरत त़लब) करेगा **अल्लाह** पाक उस की मग़्फ़िरत फ़रमा देगा। (اَسْتَغْفِرُ اللّٰه कहना भी इस्तिग़फ़ार या'नी मग़्फ़िरत त़लब करना है)।

(ترمذی، 5/288، حدیث:3481) (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 299)

﴾51﴿ दीदारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का वज़ीफ़ा

दा'वते इस्लामी के इदारे मक्तबतुल मदीना की 561 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत"** (मुकम्मल) सफ़ह़ा 115 ता 116 पर है :

अ़र्ज़ : ह़बीबे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारते शरीफ़ा ह़ासिल होने का क्या त़रीक़ा है ?

इर्शाद : दुरूद शरीफ़ की कसरत शब में और सोते वक़्त के इलावा हर वक़्त तक्सीर (या'नी कसरत) रखे बिल ख़ुसूस इस दुरूद शरीफ़ को बा'दे इशा सो बार या जितनी बार पढ़ सके पढ़े

﴾اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا اَمَرْتَنَا اَنْ نُّصَلِّيَ عَلَيْه﴿

﴾اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا هُوَ اَهْلُهٗ﴿

﴿اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ کَمَا تُحِبُّ وَ تَرْضٰی لَہٗ﴾

﴿اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی رُوْحِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِی الْاَرْوَاحِ﴾

﴿اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی جَسَدِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِی الْاَجْسَادِ﴾

﴿اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی قَبْرِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِی الْقُبُوْرِ صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی سَیِّدِنَا وَ مَوْلٰنَا مُحَمَّدٍ﴾

हुसूले ज़ियारते अक़्दस (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के लिये इस से बेहतर सीग़ा नहीं मगर ख़ालिस ता'ज़ीमे शाने अक़्दस (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के लिये पढ़े इस निय्यत को भी जगह न दे कि मुझे ज़ियारत अ़ता हो, आगे उन का करम बेहद व बे इन्तिहा है।

فِراق و وَصل چہ خواہی رِضائے دوست طَلَب
کہ حَیف باشَد اَز و غیرِ اُو تمنّائی

(या'नी नज़्दीकी व दूरी से क्या मत़लब ! दोस्त की ख़ुशनूदी त़लब कर कि इस के इ़लावा दोस्त से किसी और शै की आरज़ू करना क़ाबिले अफ़्सोस है)

जल्वए यार इधर भी कोई फेरा तेरा हसरतें आठ पहर तकती हैं रस्ता तेरा

(ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 162)

﴾52﴿ लूले लंगड़े की ग़ीबत

ताबेई बुज़ुर्ग **ह़ज़रते** मुआ़विया बिन क़ुर्रह رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "अगर तुम्हारे पास से कोई लुन्जा (या'नी लूला या लंगड़ा) गुज़रे और तुम उस के लुन्जे पन के ऐ़ब का तज़्किरा करो तो येह भी **ग़ीबत** है।"

(تفسیر درمنثور، 7/571) (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 182)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

अगले हफ़्ते का रिसाला

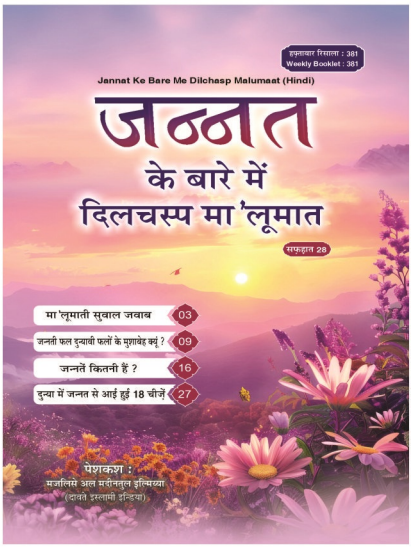

DAWATEISLAMI INDIA

FGN Channel
Dekhte Rahiye

MAKTABATUL MADINA INDIA

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025